महिलाओं के राजनैतिक सशक्तीकरण की स्थिति : रोहतक जिले के संदर्भ में

संजय बुन्देला

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एण्ड मेथोडोलॉजी,

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर(राजस्थान)

मुनीषा शर्मा

शोधार्थी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एण्ड मेथोडोलॉजी,

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर(राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण की स्थिति को स्पष्ट करते हुए महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण की समस्याओं और समाधानों को उजागर करने का प्रयास करता है। वर्तमान में महिला सशक्तीकरण की स्थिति चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और राजनैतिक किसी भी क्षेत्र में हो अभी भी संतोषजनक नहीं है। प्रस्तुत शोध इसके कारणों को जानने का प्रयास भी करता है।

मुख्य शब्द–

राजनीतिक सशक्तीकरण, पुरूष प्रधान समाज, नारी समाज, महिला सरपंच ।

प्रस्तावना

महिलाओं के विकास और उनके सशक्तीकरण पर असंख्य प्रयास जारी है। महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से सशक्त करने के लिए सरकार संवैधानिक प्रावधान कर रही है और गैर सरकारी संगठन अपने–अपने स्तर पर प्रयास कर रहे है। फिर भी समाज में महिलाओं की स्थिति में संतुष्टिजनक परिवर्तन नहीं आ पा रहा है। कुछ महिलाओं को उदाहरण मानकर संपूर्ण नारी समाज को सशक्त कहना हास्यापद होगा क्योंकि आज भी ग्रामीण स्तर पर महिलाओं को उसी प्रकार के समाज में रहना पड़ता है जैसा दशकों पहले था। संवैधानिक प्रावधानों के कारण महिलाओं का राजनीति में प्रवेश तो हो गया है परंतु महिलाओं को राजनैतिक स्वतंत्रता आज भी नहीं मिली है। जिस प्रकार महिलाऐं कामकाजी तो हो रही है परंतु उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। ग्रामीण स्तर पर महिला सरपंच और प्रधानों की भूमिका निभा रही है परंतु क्या यह वास्तविक राजनैतिक सशक्तीकरण है या वह पुरूष प्रधान समाज की कठपुतली बन गई है? ग्रामीण महिलाओं को राजनीति में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है? प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण के इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास है।

शोध के उद्देश्य

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण की स्थिति का पता लगाना।

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण की बाधाओं और समस्याओं का पता लगाना।

शोध क्षेत्र

शोध हेतु हरियाणा राज्य के रोहतक जिले का चयन किया गया। जिसका क्षेत्रफल 937 वर्गकिलोमीटर है। जिसमें 852.43 वर्गकिलोमीटर ग्रामीण क्षेत्र और 84.80 वर्गकिलोमीटर शहरी क्षेत्र है। इसकी जनसंख्या 7,34,328 है। इसमें 91 गांव सम्मिलित है। रोहतक में 100 महिला सरपंचों से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा तथ्यों का संकलन करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए।

Copyright ⓒ 2020Authors

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विशेष प्रभाव होता है। उच्च सामाजिक वर्ग (जाति) व आर्थिक वर्गों की महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी अधिक पाई गई, जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक तबके की महिलाओं में यह भागीदारी अत्यधिक कम थी।

हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में चुनावों में मतदाता के रूप में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है। अनेक राज्यों में हुए विभिन्न चुनावों में महिलाएँ पुरुषों के समान मतदान कर रही हैं, जबकि कई स्थानों पर वे पुरुषों की तुलना में अधिक मतदान कर रही हैं।

राजनीति में पुरुषों का वर्चस्व

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में पुरुषों का वर्चस्व मुख्य बाधकों में से एक है। 50 वर्ष से अधिक उम्र की दो–तिहाई महिलाओं का मानना है कि पुरुषों के राजनीतिक वर्चस्व के कारण महिलाओं को राजनीति में अवसर नहीं मिलता, जबकि 20–25 वर्ष की आधी महिलाओं की राय इसके विपरीत है।

इसके अलावा अधिकांश महिलाओं का मानना है कि भारतीय मतदाता महिलाओं की तुलना में पुरुष उम्मीदवारों के पक्ष में अधिक मत देते हैं।

राजनीतिक अवसरों में किसी चुनाव लड़ना, राजनीतिक दल का टिकट मिलना तथा चुनाव जीतने की प्रायिकता आदि को शामिल किया गया है।

सामाजिक–राजनीतिक पृष्ठभूमि

सर्वेक्षण के माध्यम से यह पता चला कि किसी महिला के लिये राजनीति में भाग लेने के लिये उसकी पृष्ठभूमि महत्त्वपूर्ण है। अधिकांश महिलाओं ने यह माना कि ऊँची जाति की महिलाओं के लिये राजनीति में हिस्सा लेना आसान है, जबकि निम्न जाति की महिलाओं के लिये यह तुलनात्मक रूप से कठिन है।

इसके अलावा राजनीतिक पृष्ठभूमि वाली महिला के लिये किसी गैर–राजनीतिक पृष्ठभूमि वाली महिला की तुलना में राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना आसान है।

घरेलू स्तर पर राजनीतिक निर्णय में पितृसत्ता का प्रभाव

अधिकांश महिलाओं का मानना है कि घरों में राजनीतिक निर्णय लेने में उन्हें कम स्वायत्तता प्राप्त होती है। इसका मुख्य कारण पितृसत्तात्मक समाज तथा रूढ़िवादी सामाजिक ढाँचा है।

राजनीतिक समाचारों में रुचि

इस सर्वेक्षण द्वारा यह पाया गया कि 71 प्रतिशत महिलाओं ने विभिन्न माध्यमों से राजनीतिक समाचारों को पढ़ने में रुचि प्रदर्शित की। ये माध्यम मीडिया, न्यूज़ चौनल, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप आदि हो सकते हैं।

समाचारों में रुचि भी महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुसार प्रभावित होती है। उच्च सामाजिक–आर्थिक वर्ग की महिलाओं में यह प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी

सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीति में भागीदारी करने के मामले में महिलाओं की संख्या काफी कम है।

सर्वेक्षण में केवल 11 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि वे किसी भी प्रकार से सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं, जबकि 89 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि सोशल मीडिया पर राजनीतिक रूप से बिल्कुल सक्रिय नहीं हैं।

राजनीतिक भागीदारी में महिलाओं की स्वायत्तता

हालाँकि विगत कुछ वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है लेकिन शोध में लगभग 36 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे राजनीतिक निर्णय लेने के मामले में अभी भी स्वायत्त नहीं हैं।

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के निम्नलिखित कारण हैं

पितृसत्तात्मक समाज

Copyright ⓒ 2020Authors

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के मुख्य कारणों में पितृसत्तात्मक समाज तथा इसकी संरचनात्मक कमियाँ हैं। इसकी वजह से महिलाओं को कम अवसर मिलते हैं तथा वे राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में पुरुषों से काफी पीछे रह जाती हैं।

लगभग एक–तिहाई महिलाओं ने पितृसत्तात्मक समाज को उनकी राजनीतिक भागीदारी में बाधा के रूप में देखा।

घरेलू जिम्मेदारियाँ

सर्वेक्षण में अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि घरेलू ज़िम्मेदारियाँ जैसे– बच्चों की देखभाल, घर के सदस्यों के लिये खाना बनाना व अन्य पारिवारिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं ले पातीं।

लगभग 13 प्रतिशत महिलाओं ने राजनीति में उनकी कम भागीदारी के लिये घरेलू ज़िम्मेदारियों को कारण माना।

व्यक्तिगत कारण

कई महिलाएँ व्यक्तिगत कारणों की वजह से भी राजनीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेतीं। ये व्यक्तिगत कारण हैं– राजनीति में रुचि न होना, जागरुकता का अभाव, शैक्षिक पिछड़ापन आदि।

सांस्कृतिक प्रतिबंध एवं रूढ़िवाद

सांस्कृतिक मानदंडों तथा रूढ़िवादिता के कारण भी महिलाएँ राजनीति में भाग नहीं ले पातीं। सांस्कृतिक प्रतिबंधों में पर्दा प्रथा, किसी अन्य पुरुष से बातचीत न करना, महिलाओं का बाहर न निकलना आदि शामिल हैं।

सामाजिक–आर्थिक कारण

कमज़ोर सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

राजनीति की नकारात्मक छवि

आम लोगों में राजनीति की नकारात्मक छवि तथा इसमें व्याप्त भ्रष्टाचार की वजह से भी महिलाएँ राजनीति में कम रूचि लेती हैं।

महिलाओं को लेकर राजनीतिक दलों की उदासीनता

राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को लेकर देश के राजनीतिक दलों तथा सरकारों ने उदासीनता प्रदर्शित की है।

प्रस्तावित महिला आरक्षण विधेयक (Women Reservation Bill), जो कि संसद तथा राज्य की विधानसभाओं में महिलाओं के लिये आरक्षण का प्रावधान करता है, को पारित करने में सभी राजनैतिक दल निरुत्साहित प्रतीत होते हैं।

इसका मुख्य कारण यह है कि पुरुष राजनीतिज्ञों को इस बात का भय रहता है कि महिलाओं के निर्वाचन से उनके दोबारा चुने जाने की संभावना कम या समाप्त हो सकती है जिसके लिये वे तैयार नहीं हैं।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हेतु आवश्यक समाधान

संसद में महिलाओं के लिये आरक्षण

भारतीय संविधान में 73वें और 74वें संशोधन द्वारा महिलाओं के लिये स्थानीय निकाय की एक–तिहाई सीटों के आरक्षण का प्रावधान किया गया है लेकिन राजनीति में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये अन्य प्रयास किये जाने की भी आवश्यकता है।

राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिये आरक्षण

यद्यपि यह कदम महिला सांसदों की संख्या में वृद्धि के संबंध में कोई ठोस आश्वासन प्रदान नहीं करता है किंतु राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करने के लिये यह ठोस कदम हो सकता है।

विश्व के कई देशों में यह प्रावधान किया गया है जैसे– स्वीडन, नॉर्वे, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस आदि।

Copyright ⓒ 2020Authors

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु माहौल प्रदान करना

राजनीति व अन्य विविध क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये आवश्यक है कि समाज में प्रत्येक स्तर पर महिला सशक्तीकरण तथा उनकी सामुदायिक भागीदारी के लिये प्रयास किये जाएँ ताकि उनमें आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता आदि गुणों का विकास हो।

संदर्भ ग्रंथ

1. ऑर्टनर, शेरी बी0, दि डिवैल्यूएशन ऑफ वूमेन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली
2. बुच, निर्मला, महिलाओं हेतु नियोजन की चुनौतियाँ, योजना, वर्ष–56, अंक–8, अगस्त, 2019
3. चट्टोपाध्याय, अरुंधती, भारतीय राज्यों में स्त्री सशक्तिकरण, योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून, योजना भवन, नयी दिल्ली
4. जेंडरिंग ह्यूमन डेवलपमेंट इंडिसेज : रिकास्टिंग द जेंडर डेवलपमेंट इंडेक्स एंड जेंडर इम्पावरमेंट फॉर इंडिया–2019, केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, समरी ऑफ रिपोर्ट
5. पटेल, अमृत, कृषि क्षेत्र में महिलाएं, योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून, योजना भवन, नयी दिल्ली, 2019
6. शर्मा, ममता, सशक्तिकरण के 20 वर्ष, योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून, योजना भवन, नयी दिल्ली, 2019
7. सिंह, रश्मि, स्त्री शक्ति – महिला सशक्तिकरण, योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून, योजना भवन, नयी दिल्ली, 2019
8. जनगणना, 2011 भारत सरकार

Copyright ⓒ 2020Authors